सितम्बर 2014 – सितम्बर 2016

द्विवर्षीय कार्यकाल विशेषांक

कामधेनु

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं – 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : : + 91-1581-226080/025, फैक्स : 227280

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

वेबसाईट : www.jvbharati.org

अन्तर्पृष्ठीय...

द्विवर्षीय कार्ययोजना एवं क्रियान्विति

जैन विश्व भारती संस्थान : रजत जयंती वर्ष समारोह

प्रवृत्तियों का विकास

परिसर का विकास

आशीर्वचन

अर्हम्

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। उसके द्वारा जैन विद्या, शिक्षा, साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी विभिन्न महत्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का महनीय मार्गदर्शन इस संस्था को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) उसके साथ जुड़ा हुआ है। लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर मुनिवृन्द, समणीवृन्द और मुमुक्षुवृन्द का भी आवास स्थल बना हुआ है। तेरापंथ समाज मानों इस माने भी भाग्यशाली है कि उसके पास इतनी बड़ी संस्था है। यह संस्था आध्यात्मिक आरोहण करती रहे तथा समाज को आध्यात्मिक पोषण देती रहे। शुभाशंसा।

गुवाहाटी (असम)
2 सितम्बर 2016

आचार्य महाश्रमण

प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर, जीवन अर्पण है सारा।
बढ़े चलें हम रुकें न क्षण भी, हो यह दृढ़ संकल्प हमारा॥

जैन विश्व भारती के शुभ भविष्य के प्रति अनंत मंगलकामनाएं

जैन विश्व भारती टीम (2014-16)

सितम्बर 2014 – सितम्बर 2016

द्विवर्षीय कार्यकाल विशेषांक

कामधेनु

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

प्रकाशक
अरविन्द गोठी, मंत्री
जैन विश्व भारती

संपादक
महावीर बी. सेमलानी

सह-संपादक
राजेन्द्र खटेड़

कम्प्यूटर सहयोग
मनीष भोजक

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : +91-1581-226025 / 080
फैक्स : +91-1581-227280
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com
वेबसाइट : www.jvbharati.org

मुद्रक
जयपुर पब्लिसिटी सेन्टर
डी-24, शान्ति पथ, तिलक नगर, जयपुर-04
फोन : 0141-2621061/62

अनुक्रम

आशीर्वचन	आचार्यश्री महाश्रमण	
अध्यक्ष की कलम से	धरमचंद लुंकड़	3
जैन विश्व भारती के कुलपति	'शासनसेवी श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी'	4
अक्षय ऊर्जा स्रोत	पूज्यवर का पावन आशीर्वाद	5
मिशन द्विवर्षीय कार्य योजना एवं क्रियान्विति		6-10
विविध आयोजन		11
जैन विश्व भारती संस्थान : रजत जयंती वर्ष समारोह (विभिन्न चरण)		12-27
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह 2015		28
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह 2016		29
प्रवृत्तियों का विकास		30
जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)		31
विमल विद्या विहार सीनियर सैकेण्डरी स्कूल		32-34
महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर		35-37
महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर		38-40
श्रमण संस्कृति संकाय		41-42
जीवन विज्ञान		43-45
प्रेक्षा फाउण्डेशन		46-47
साहित्य		48
शोध		49
विविध		50
आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान		51
विशिष्ट महानुभावों का सम्मान		52
परिसर विकास		53-64
वित्तीय स्थिति		65
संत पुरुषों का जैन विश्व भारती में शुभागमन		66
उच्च पदासीन महानुभावों के साथ जैन विश्व भारती टीम		67
विनम्र श्रद्धांजलि		68

पूज्यप्रवर के इंगित और आशीर्वाद के साथ जैन विश्व भारती की पूरी टीम व समाज के सहयोग से संस्था को विकास के नये पायदान पर ले जाने का संकल्प

अध्यक्ष की कलम से

सर्वप्रथम मैं परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति को जैन विश्व भारती का अध्यक्षीय दायित्व सौंप कर जो मुझमें विश्वास जताया है, उसके लिए मैं आजीवन कृतज्ञ रहूंगा। साथ ही मातृवत्सला साध्वीप्रमुखाश्रीजी, मंत्री मुनिप्रवर, संघ महानिदेशिका, मुख्य मुनिप्रवर, साध्वीवर्या के प्रति भी हृदय की अनन्त गहराईयों से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं, आप सभी के मार्गदर्शन से यह संपूर्ण कार्यकाल निर्बाध निर्विघ्न रूप से गतिमान रहा।

पूज्यप्रवर की जैन विश्व भारती एवं संपूर्ण टीम के प्रति विशेष कृपादृष्टि बनी रही। गुरुदेव का अनेकों बार प्रवचन में जैन विश्व भारती के बारे में फरमाना, जैन विश्व भारती से जुड़े हर कार्यकर्ता में जोश का नव संचार कर देता। श्रीमुख द्वारा इंगित हर कार्य को सुचारू रूप से करने का हम सभी ने यथावत् प्रयास किया।

मेरी संपूर्ण टीम से पूरे कार्यकाल में मिले सहयोग एवं सहकार को मैं कभी विस्मृत नहीं कर सकता। मैंने जो कुछ भी करने का प्रयास किया, उसमें टीम के प्रत्येक सदस्य का योगदान एवं सहयोग निरन्तर प्राप्त होता रहा। बिना किसी बाधा एवं बिना किसी अड़चन के यह कार्यकाल संपन्न हो रहा है, इसमें समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों से प्राप्त अद्वितीय सहयोग को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

मेरे सभी पूर्वाध्यक्षों का मार्गदर्शन और आशीर्वाद भी आशा से अधिक प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती के समस्त पूर्वाध्यक्षों ने मिलकर जो कार्य किया है, उसी का प्रतिफल है कि मुझ जैसे सामान्य कार्यकर्ता को जैन विश्व भारती के अध्यक्षीय पद के दायित्व निर्वहन में किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। जैन विश्व भारती के पूर्वाध्यक्षों ने जिस प्रकार से इस संस्था में बीज बोए एवं उन्हें सींचा, उसी का परिणाम है कि जैन विश्व भारती आज एक वटवृक्ष की भांति हमारे सामने खड़ा है तथा इसकी छाया जैन–जैनेतर को शीतलता प्रदान कर रही है।

मुझे जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी, प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी, जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी आदि का कदम–कदम पर मार्गदर्शन मिला, इसके लिए मैं उन्हें नमन करते हुए उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

मुझे जैन विश्व भारती के इस द्विवर्षीय कार्यकाल में संपूर्ण देश भर में यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ। हर गांव–शहर में मिले आत्मीय सहकार एवं वात्सल्य से मन सदैव हर्षित होता रहा। समाज के बंधुओं में जैन विश्व भारती के प्रति लगाव और सजगता प्रदर्शित हुई, यह आत्मतोष की बात है।

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) भी दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। संस्थान की पूर्व कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी का मार्गदर्शन मेरे जीवन के लिए अमृत बन गया। उनकी आचार्यप्रवर के प्रति अटूट आस्था और संस्थान के प्रति बेजोड़ समर्पण रहा। संस्थान के वर्तमान कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ एवं कुलाधिपति श्री बसंतराज भण्डारी से भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती की शैक्षणिक इकाई के रूप में संचालित विमल विद्या विहार, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर व टमकोर की गति–प्रगति आशा से अधिक फलीभूत हुई तथा भविष्य में भी यूं ही प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

अंत में मैं समाज से मिले उदारमना सहयोग एवं अनुदान हेतु सभी के प्रति साधुवाद प्रकट करता हूं। मैं आशा करता हूं कि आचार्यप्रवर की कृपादृष्टि जैन विश्व भारती पर यूं ही बनी रहे और जैन विश्व भारती चहुंमुखी विकास करती हुई विश्व में अपना नाम रोशन करती रहे।

आगामी अध्यक्ष एवं संपूर्ण टीम को अनेकानेक मंगलकामनाओं सहित–

ओम अर्हम्

धरमचंद लुंकड़

जैन विश्व भारती के कुलपति 'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी

गोगासर निवासी दिल्ली प्रवासी 'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी सुप्रसिद्ध उद्योगपति होने के साथ-साथ तेरापंथ धर्मसंघ के एक निष्ठावान सुश्रावक हैं। स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त कर लगभग 45 वर्ष पूर्व प्लास्टिक उद्योग में कुण्डलिया इण्डस्ट्रीज के साथ प्रारम्भ किया गया एक उपक्रम आपकी कड़ी मेहनत, बुद्धि कौशल, कार्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, कुशल नेतृत्व शैली, व्यवहार कुशलता आदि विशिष्टताओं के कारण प्रगति का सफर तय करता हुआ आज के.एल.जे. ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज के नाम से न केवल देश में अपितु विदेश में भी उद्योग जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान बना चुका है। आप इस संपूर्ण के.एल.जे. ग्रुप के चेयरमैन के रूप में सभी कम्पनियों को अपना सक्षम नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। उद्योग एवं समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु आपको भारत सरकार, राजस्थान सरकार सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा विविध सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

व्यवसायिक कुशलता के साथ सहजता, सौम्यता, व्यवहार कुशलता आदि आपके व्यक्तित्व की विरल विशिष्टताएं हैं। प्रखर वक्ता, प्रौढ़ चिंतक, सक्रिय संयोजक, सक्षम कार्यप्रबंधक के रूप में समाज में आपकी एक अलग पहचान है। आपने अपनी असाधारण प्रतिभा से न केवल परिवार अपितु समाज का भी नाम रोशन किया है। व्यवसाय के साथ-साथ समाज सेवा के क्षेत्र में आपका विशिष्ट योगदान रहा है। चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में आपने उल्लेखनीय सेवा कार्य किए हैं। अनेक सार्वजनिक व सामाजिक संस्थाओं के शीर्षस्थ पदों पर आप अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आप दिल्ली में जैनों की चारों संप्रदायों की प्रमुख संस्था जैन महासभा के संरक्षक, तेरापंथ धर्मसंघ की शीर्षस्थ केन्द्रीय संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के परामर्शक, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष, सोसायटी फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, फोरम फॉर एजुकेशन एण्ड ह्यूमन डेवलपमेंट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर सेवारत हैं। आपने अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी के रूप में लगभग 30 वर्षों तक सेवाएं प्रदान की और अपने कुशल नेतृत्व से इस छोटी सी संस्था को राष्ट्रीय स्तर की संस्था के रूप में पहचान करायी। जैन विश्व भारती को आपने न्यासी व परामर्शक एवं जैन विश्व भारती संस्थान को प्रबंध मण्डल के सदस्य के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की। जैन विश्व भारती परिसर में आपके सौजन्य से सुमेरू अतिथि गृह निर्मित है, जिसका संस्था की विविध प्रवृत्तियों में निरन्तर उपयोग हो रहा है। जैन विश्व भारती व जैन विश्व भारती संस्थान सहित धर्मसंघ और समाज की अनेक संस्थाओं को आप मुक्तहस्त सहयोग प्रदान करते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ व संघपति के प्रति आपकी अटूट आस्था है। अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं कुशल कार्यशैली से आपने आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की असीम कृपादृष्टि प्राप्त की एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी की शुभदृष्टि में आप धर्मसंघ की सेवा में अनवरत संलग्न हैं। संघ एवं संघपति के प्रति आपकी उल्लेखनीय आंतरिक भक्ति एवं दृढ़ आस्था का मूल्यांकन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आपको 'शासनसेवी' के गरिमामय संबोधन से संबोधित किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने आपकी दीर्घकालीन सेवाओं का अंकन करते हुए आपको 'युवक रत्न' के अलंकरण से सम्मानित किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन दृष्टि के अनुसार ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व को जैन विश्व भारती के 'कुलपति' जैसे सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित कर संस्था परिवार गौरवान्वित है।

हम आपके सफल कार्यकाल की मंगलकामना करते हैं।

अक्षय ऊर्जा का स्रोत
गुरु का पावन सान्निध्य और सतत् आशीर्वाद

जैन विश्व भारती की टीम पर गुरु आशीर्वाद की अमृत वर्षा

जैन विश्व भारती
द्विवर्षीय विकास योजना और क्रियान्विति (सत्र 2014-16)

जैन विश्व भारती के द्विवर्षीय कार्यकाल के लिए विकास योजना का एक विजन तैयार किया गया और उस विजन के अनुसार योजनाओं और गतिविधियों को आगे बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया। इस विजन को परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी को निवेदन कर पूरी टीम के समक्ष प्रस्तुत किया गया। पूरी टीम ने एक स्वर में आचार्यप्रवर से प्राप्त आशीर्वाद के अनुसार द्विवर्षीय विकास योजना के विजन के आधार पर मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर जैन विश्व भारती के सर्वांगीण विकास में तन-मन-धन से सहयोग का संकल्प व्यक्त किया।

पूज्यप्रवर के पावन आशीर्वाद, पूरी टीम के श्रम व समन्वित योगदान तथा संपूर्ण समाज के सहयोग व सहभागिता से निर्धारित कार्ययोजना के आधार पर जो क्रियान्विति हो पाई, उसकी अवगति प्रस्तुत है-

शिक्षा : विद्यालय

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
01.	जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित तीन विद्यालयों के लिए सभी प्रकार की आवश्यकताओं व सुविधाओं की पूर्ति का लक्ष्य।	सभी विद्यालयों के सुव्यवस्थित संचालन और अपेक्षाओं की पूर्ति की दृष्टि से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत शिक्षा विभाग का गठन किया गया और उस विभाग के निर्देशन में तीनों विद्यालयों का विकास हुआ। विमल विद्या विहार के प्राईमरी सेक्शन में विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए प्राईमरी सेक्शन को परिसर स्थित जीवन विज्ञान भवन में स्थानान्तरित कर सुविधायुक्त स्थान उपलब्ध कराया गया। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर के नवनिर्मित प्रथम तल के अवशिष्ट निर्माण कार्य को पूरा करवा कर पूर्व की बकाया देनदारियों का भुगतान किया गया। स्वागत कक्ष, विभिन्न प्रकार की प्रयोगशालाओं का निर्माण करवाया गया। विद्यालय परिसर में हरितिकरण कराया गया। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर में प्रथम तल पर महाश्रमण विंग, भूतल पर प्रशासनिक प्रखण्ड, संपूर्ण विद्यालय भवन की मरम्मत व नवीनीकरण का कार्य कराया गया। पुस्तकालय और कम्प्यूटर लैब की स्थापना की गई। विद्यालय परिसर में हरितिकरण कराया गया।
02	शिक्षा संबंधी सारी इकाईयों के व्यवस्थित एवं एकरूप संचालन की दृष्टि से जैन विश्व भारती की एक शैक्षणिक नीति निर्धारित करने का लक्ष्य।	इस दिशा में विशेष कार्य नहीं हो पाया।
03	तीनों विद्यालयों की एकरूपता की दृष्टि से एक ड्रेस कोड की व्यवस्था पर चिंतन।	यह क्रियान्विति नहीं की जा सकी।
04	विद्यालयों के शैक्षणिक स्तर एवं गुणवत्ता में सुधार तथा आधुनिक संसाधनों की व्यवस्था पर चिंतन।	दो विद्यालयों में नये प्राचार्यों की नियुक्ति की गई तथा तीनों विद्यालयों में अपेक्षानुसार नये प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्तियां की गई। तीनों विद्यालयों में आधुनिक संसाधनों की सुव्यवस्था की गई।

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
05	तीनों विद्यालयों में जीवन विज्ञान प्रभावी रूप से लागू करने का प्रयास।	तीनों विद्यालयों में जीवन विज्ञान की कक्षाएं सुचारू रूप से संचालित की जाने लगी है।
06	विद्यालयों को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास	विमल विद्या विहार एवं महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर बन गई है। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर लगभग आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है।

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
01	जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकास व विस्तार के लिए अपेक्षित आर्थिक व्यवस्था या किसी भी प्रकार की संबद्ध आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयास।	जैन विश्व भारती संस्थान की गतिविधियों के विकास हेतु लगभग रु. 2 करोड़ की राशि अनुदानस्वरूप प्रदान की गई। संस्थान की प्रवृत्तियों के प्रचार-प्रसार व विस्तार हेतु अलग-अलग योजनाओं पर लगभग रु. 2 करोड़ की राशि खर्च की गई।
02	जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय का परस्पर समन्वय रखते हुए दोनों संस्थाओं के विकास का लक्ष्य।	मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा अपने वार्षिक बजट का सम्यक् निर्धारण करते हुए पूर्ण आपसी समन्वय के साथ दोनों संस्थाओं का विकास किया गया। मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान के रजत जयन्ती वर्ष समारोह का देश-विदेश में वृहद् स्तर पर कार्यक्रम आयोजित कर संस्थान की गतिविधियों को जनसम्मुख बनाने का सार्थक प्रयास किया गया।
03	विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा विभाग को सशक्त बनाते हुए पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों की संख्या 10-12 हजार पहुंचाने का लक्ष्य ताकि विश्वविद्यालय आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ सके।	विभिन्न माध्यमों से व्यापक प्रचार-प्रसार कर विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा विभाग को सशक्त बनाने का प्रयास किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के राजस्थान से बाहर दूरस्थ शिक्षा के केन्द्र नहीं बनाने के निर्देश के बावजूद भी केवल राजस्थान के केन्द्रों में पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों की संख्या लगभग 8 हजार से अधिक पहुंची।

साहित्य

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
01	आगम साहित्य को महत्व देते हुए अप्रकाशित आगमों के तुरन्त प्रकाशन की व्यवस्था की जायेगी।	इस दिशा में कार्य जारी है। कुछ आगम प्रकाशित किये गये है, कुछ आगम प्रकाशनाधीन है एवं कुछ आगम प्रकाशन संबंधी प्रक्रिया में है। आगम साहित्य प्रकाशन की सुचारू व्यवस्था हेतु समाज के अनुदानदाताओं से संपर्क कर अनुदान की व्यवस्था की गई।
02	साहित्य के समुचित प्रचार-प्रसार के लिए भारत के चार दिशा-अंचलों में चार बिक्री केन्द्रों की स्थापना	इस कार्य के लिए प्रयास जारी है। योजना बनाकर अलग-अलग क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं को भेजी गई है।

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
03	साहित्य को बार-कोडिंग प्रणाली के साथ जोड़ कर व्यवस्था को सुगम व सुदृढ़ बनाने का प्रयास।	बार-कोडिंग से पूर्व साहित्य की आई.एस.बी.एन. संबंधी पुरानी व्यवस्था को वर्तमान ऑनलाईन व्यवस्था के साथ जोड़ने की प्राथमिकता समझी गई। अतः आई.एस.बी.एन. ऑनलाईन का कार्य प्रक्रियाधीन है।
04	साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित पुस्तक मेलों में सहभागिता का प्रयास।	साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न संघीय आयोजनों आदि में स्टाल लगाकर सहभागिता की गई। देशभर में साहित्य की ऑनलाईन उपलब्धता हेतु साहित्य के ऑनलाईन स्टोर प्रारम्भ किया गया। लोकप्रिय ऑनलाईन पोर्टल Amazon पर भी कुछ चुनिंदा पुस्तकें विक्रय हेतु प्रस्तुत की गई।

प्रेक्षाध्यान

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
01	प्रेक्षाध्यान के व्यापक प्रचार-प्रसार का प्रयास	विभिन्न प्रचार माध्यमों से प्रेक्षाध्यान का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। प्रतिवर्ष अष्टदिवसीय मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित कर जागरूकता वृद्धि का प्रयास किया गया।
02	अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र को प्रेक्षाध्यान का प्रमुख केन्द्र बनाने व इस भवन के शेष कार्य को शीघ्र पूरा करवा कर इसके साथ एक विश्रांति निलयम् के निर्माण का लक्ष्य।	अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र के अवशिष्ट निर्माण कार्य को पूर्ण करवाकर उस केन्द्र का उपयोग प्रारम्भ किया गया। केन्द्र के परिपार्श्व में आनंद निलय अतिथि गृह का निर्माण कार्य द्रुत गति से जारी है।
03	'प्रेक्षा कार्ड योजना' से अधिक से अधिक लोगों को जोड़कर इस केन्द्र को प्रभावी व उपयोगी बनाने का प्रयास।	'प्रेक्षा कार्ड योजना' से अनेक लोगों/ अनुदानदाताओं को जोड़कर उन्हें श्रेणी अनुसार कार्ड प्रेषित किये गये ताकि वे संबंधित योजना के अन्तर्गत प्रेक्षाध्यान की गतिविधियों से लाभान्वित हो सकें।
04	लाडनूं में आयोजित शिविरों में संख्या बढ़ाने के लिए जेटीएन एवं अन्य प्रचार माध्यमों से प्रयास।	विभिन्न प्रचार माध्यमों से लोगों तक लाडनूं में आयोजित शिविरों की जानकारी पहुंचाई जा रही है लेकिन संख्या की दृष्टि से अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो पाई।
05	प्रेक्षावाहिनियों की संख्या बढ़ाकर प्रेक्षाध्यान के नेटवर्क को मजबूत बनाने का यथाशक्य प्रयत्न।	प्रेक्षावाहिनियों की पूर्व संख्या में 11 नई प्रेक्षावाहिनियों के गठन के साथ देशभर में 55 प्रेक्षावाहिनियों का नेटवर्क स्थापित हुआ।

जीवन विज्ञान

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
01	जीवन विज्ञान को प्राथमिक शिक्षा के साथ जोड़ने के लिए राज्य शिक्षा मंत्रालयों से संपर्क और सघन प्रयास। अगर सरकारी स्तर पर यह संभव हो जाये तो जीवन विज्ञान के लिए शिक्षक तैयार करना।	प्रशिक्षक तैयार करने की दिशा में जैन विश्व भारती संस्थान के साथ योजना बनाई जा रही है।

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
02	विश्वविद्यालय के जीवन विज्ञान विभाग को सशक्त बनाने का प्रयास। यहां से डिग्री प्राप्त करने वालों को विद्यालयों में जीवन विज्ञान की कक्षा के लिए रोजगार मिलेगा. अगर प्राथमिक शिक्षा के साथ जीवन विज्ञान सरकारी स्तर पर जुड़ पाता है। केवल राजस्थान में ही इसकी शुरुआत होती है तो 7000 प्राथमिक विद्यालय हमें मिलते है।	इस दिशा में जैन विश्व भारती संस्थान के साथ योजना पर कार्य जारी है।
03	जीवन विज्ञान के 50 प्रतिशत प्रशिक्षक तैयार करने का प्रयास ताकि वे प्रभावी ढंग से जीवन विज्ञान को प्रस्तुत कर सकें।	यह कार्य नहीं किया जा सका।
04	देश भर में संचालित जीवन विज्ञान अकादमियों से निरन्तर संपर्क रखते हुए जीवन विज्ञान का प्रचार–प्रसार एकरूप तरीके से करना।	देशभर में संचालित जीवन विज्ञान अकादमियों से संपर्क बनाये रखने की दृष्टि से 'जीवन विज्ञान अकादमी कार्यकर्ता प्रशिक्षण सेमिनार' का आयोजन पूज्यप्रवर के सान्निध्य में किया गया। समय–समय पर जीवन विज्ञान अकादमियों को विभिन्न परिपत्रों व सूचनाओं के माध्यम से जीवन विज्ञान के संदर्भ में दिशा–निर्देश प्रदान किये जा रहे है।
05	जीवन विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र के भवन के सुनियोजित उपयोग के लिए प्रयास	जीवन विज्ञान भवन के व्यवस्थित उपयोग की दृष्टि से विमल विद्या विहार के प्राईमरी सेक्शन का उक्त भवन में संचालन।

जैन विद्या का विकास

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
01	जैन विद्या के व्यापक प्रचार–प्रसार करने की दिशा में प्रयास	जैन विद्या के व्यापक प्रचार–प्रसार की दृष्टि से जैन विद्या दिवस, जैन विद्या सप्ताह का देशभर में सुनियोजित आयोजन किया गया। विभिन्न प्रचार माध्यमों से जैन विद्या का व्यापक प्रचार–प्रसार किया गया।
02	परीक्षार्थियों की संख्या दस हजार तक पहुंचाने का लक्ष्य।	विभिन्न माध्यमों से प्रयासों तथा कार्यकर्ताओं की प्रेरणा से परीक्षार्थियों की संख्या 9 हजार तक पहुंची। संभवतः इस वर्ष 10 हजार से अधिक परीक्षार्थी हो सकेंगे।
03	देशभर में जैन विद्या कार्यशालाओं का आयोजन कर जैन विद्या के प्रति रूचि उत्पन्न करने का प्रयास।	राज्य स्तरीय/अंचल स्तरीय जैन विद्या कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशालाओं के आयोजन के माध्यम से जैन विद्या के प्रति जागरूकता वृद्धि का प्रयास किया गया।

अन्यान्य

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
01	जैन विश्व भारती कैम्पस को और अधिक सुन्दर और मनोरम बनाने का प्रयास	जैन विश्व भारती परिसर का नवीनीकरण एवं हरितिकरण करवाकर मनोरम बनाया गया।
02	जैन विश्व भारती की पानी, बिजली एवं ड्रैनेज व्यवस्था को ठीक करने का लक्ष्य	पानी के खारेपन को कम करने के लिए वैज्ञानिक तरीके से निर्मित एक विशेष प्रकार के पाईप की स्थापना की गई, जिससे पानी की गुणवत्ता में कुछ सुधार हुआ। बिजली व्यवस्था को सुचारू करने हेतु परिसर में नया ट्रांसफार्मर स्थापित कराया गया। बिजली बचत की दृष्टि से परिसर कुछ सोलर लाईट्स लगाई गई तथा पुरानी लाईट्स के स्थान पर नई एल.ई.डी. लाईट्स स्थापित की गई।

क्र.सं.	विजन	क्रियान्विति
03	अर्थ की कमी से जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय का कोई कार्य बाधित नहीं होगा एवं जैन विश्व भारती के वर्तमान कम्पस को किसी भी हालत में बन्ध नहीं किया जायेगा एवं न ही किसी योजना में उसे उपयोग किया जायेगा। किसी भी योजना के लिए नए सिरे से अनुदान प्राप्त करने का प्रयास	पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद और समाज के भरपूर सहयोग से जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान का कोई भी कार्य एवं कोई भी गतिविधि अर्थ की कमी से बाधित नहीं हुई बल्कि अपेक्षा से अधिक सहयोग समाज का प्राप्त हुआ। अनेक नई योजनाओं की क्रियान्विति एवं विकास कार्यों पर खर्च करने के बाद जैन विश्व भारती के कोष में लगभग रु. 1.75 करोड़ की वृद्धि की गई।
04	अधिक से अधिक लोगों को जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों व योजनाओं से जोड़ने का लक्ष्य	विभिन्न आयोजनों, संचार माध्यमों एवं जन संपर्क के द्वारा हजारों-हजारों लोगों तक जैन विश्व भारती की गतिविधियों को पहुंचाया गया। लगभग 165 नये लोगों को जैन विश्व भारती की सदस्यता से जोड़ा गया।
05	देश-विदेश की यात्रा कर जैन विश्व भारती की गतिविधियों के बारे में लोगों को बताकर उन्हें इनसे जुड़ने की अपील और अधिकाधिक लोगों को जोड़ने का लक्ष्य एवं विदेश के केन्द्रों को भी सशक्त करने का	देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राएं की गई एवं गतिविधियों के बारे में लोगों को अवगत कराया गया। विदेश की यात्राएं नहीं हो सकी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार की दृष्टि से प्रथम बार अंतर्राष्ट्रीय संयोजक नियुक्त किया गया।
06	जैन विश्व भारती के व्यापक स्वरूप को 'कामधेनु' मैगजीन के माध्यम से समाज के समक्ष उजागर करने का प्रयास	कामधेनु पत्रिका आप सबके हाथों में है।
07	वाट्सएप्प, यू-ट्यूब, ट्वीटर आदि सोशल मीडिया व संस्कार चैनल, पारस चैनल, जेटीएन आदि अन्य प्रचार माध्यमों से जैन विश्व भारती के बारे में सुनियोजित व व्यापक प्रचार-प्रसार का लक्ष्य	सभी संचार माध्यमों का व्यापक स्तर पर उपयोग किया गया और संस्था को उसका भरपूर लाभ भी प्राप्त हुआ।
08	आचार्यप्रवर के इंगित के अनुसार टीम भावना के साथ कार्य करने की प्राथमिक अनिवार्यता	आचार्यप्रवर के इंगित को वेद वाक्य मानकर कार्य किया गया। आचार्यप्रवर का पावन आशीर्वाद और संप्रेषित ऊर्जा ही द्विवर्षीय कार्यकाल में अनंत शक्ति का स्रोत रही। पूरी टीम ने अपनी पूरी शक्ति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संस्था के विकास में अपना योगदान दिया, जिससे संस्था विकास के पथ पर अग्रसर हो सकी।

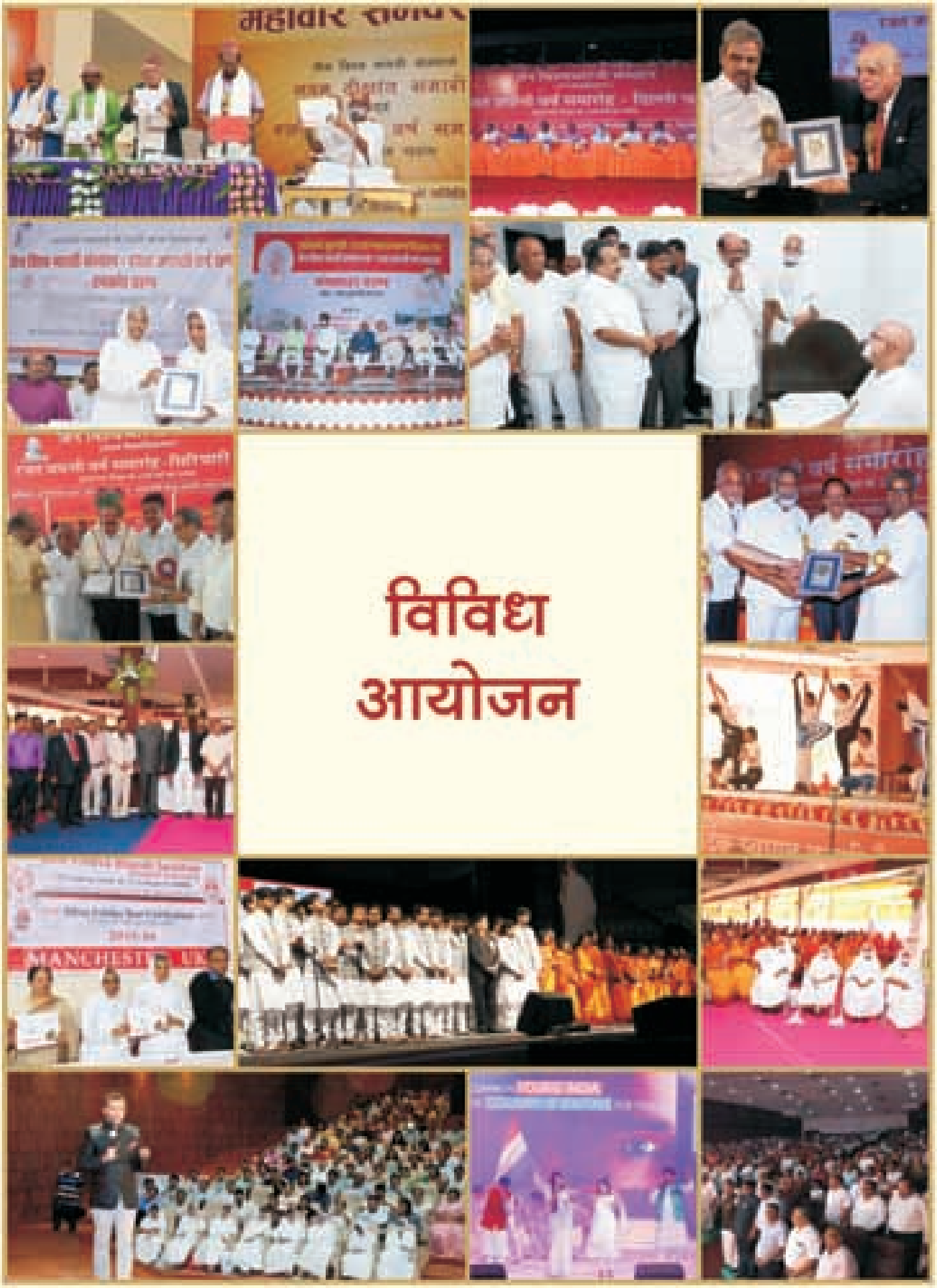

विविध आयोजन

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : लाडनूं चरण (20-21 मार्च 2015)

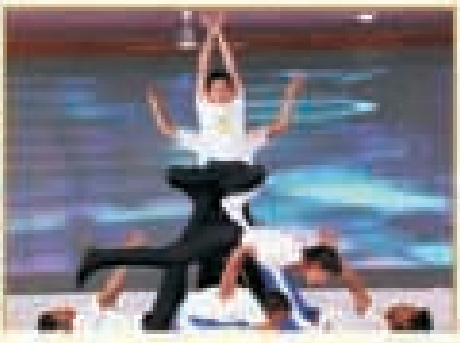

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : चेन्नई चरण (20 मई 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : बैंगलोर चरण (06 जून 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : गंगाशहर चरण (03-04 जुलाई 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : टमकोर चरण (14 जुलाई 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : जयपुर चरण (24 जुलाई 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : केसिंगा चरण (25 अगस्त 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : दिल्ली चरण (30 अगस्त 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : सिरियारी चरण (26 सितम्बर 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : विराटनगर चरण (4 अक्टूबर 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : मुम्बई चरण (11 अक्टूबर 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : कोलकाता चरण (1 नवम्बर 2015)

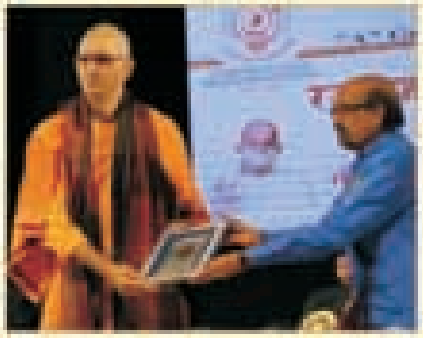

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : सूरत चरण (10 जनवरी 2016)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : विदेश की धरती पर

बैंकॉक चरण (22 अगस्त 2015)

हांगकांग चरण (29 अगस्त 2015)

सेक्रामेन्टो चरण (7 सितम्बर 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : विदेश की धरती पर

मैनचेस्टर चरण (18 सितम्बर 2015)

बर्मिंघम चरण (20 सितम्बर 2015)

इंडोनेशिया चरण

जैन विश्व भारती संस्थान
रजत जयन्ती वर्ष समारोह : विदेश की धरती पर

लंदन चरण (28 सितम्बर 2015)

CELEBRATING 25 YEARS OF
SPREADING VALUE EDUCATION
1991 - 2015

जैन विश्व भारती संस्थान
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह (21 जून 2015)

जैन विश्व भारती संस्थान
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह (21 जून 2016)

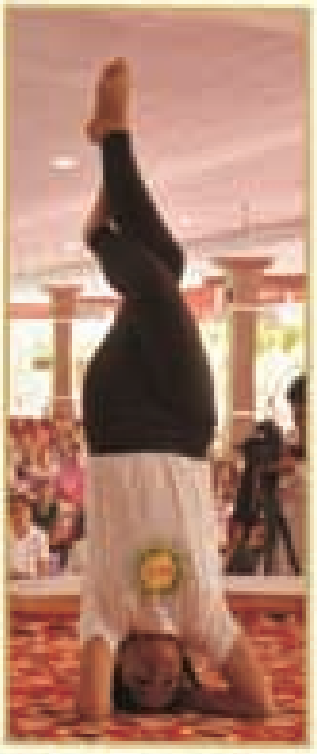

प्रवृतियों का विकास

शिक्षा

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

- संस्थान के साथ पूर्ण समन्वय रखते हुए समन्वित रूप से विकास में अपेक्षानुसार पूर्ण सहयोग।
- जैन विश्व भारती संस्थान के 25वें वर्ष में प्रवेश पर मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा रजत जयन्ती वर्ष समारोह का वर्षव्यापी आयोजन एवं इस आयोजन के क्रम में देश–विदेश में 21 स्थानों पर भव्य समारोह का आयोजन।
- जैन विश्व भारती संस्थान की आर्थिक अपेक्षाओं की पूर्ति तथा गतिविधियों के निर्बाध संचालन हेतु शिक्षा संपोषण योजना के अन्तर्गत अनुदान संग्रह कर रु. 2 करोड़ की वित्तीय सहायता प्रदत्त।
- जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर इंटरनेशनल रिसर्च सेन्टर के सुव्यवस्थित संचालन हेतु परिसर स्थित अहिंसा भवन का प्रथम तल उपयोग हेतु प्रदत्त।
- संस्थान के पुरुष छात्रावास के रूप में परिसर स्थित वर्षा–संजय सदन का प्रथम तल उपयोग हेतु प्रदत्त।
- संस्थान में बी.एड., एम.एड. में अध्ययनरत छात्राओं के लिए जोधपुर मॉल का प्रथम तल उपयोग हेतु प्रदत्त।
- दोनों संस्थाओं के मध्य परिसर उपयोग संबंधी अनुबंध का आगामी पांच वर्षों के लिए पुनः पंजीकरण।
- संस्थान की दीर्घकालीन अपेक्षा की पूर्ति की दृष्टि से संस्थान परिसर में मातृ संस्था की प्रेरणा से अनुदानदाता के सहयोग से सत्कार जलपान गृह एवं अतिथि गृह का निर्माण।
- संस्थान के महिला छात्रावास भवन की आवश्यक मरम्मत एवं रंगरोगन कार्य।

विमल विद्या विहार सीनियर सैकेण्डरी स्कूल

- दिनांक 19 अप्रैल 2015 को विद्यालय के वार्षिकोत्सव का आयोजन।
- सुरक्षा की दृष्टि विद्यालय में सी.सी.टी.वी. कैमरो एवं अग्निशमन यंत्रों की स्थापना।
- पीने योग्य पानी की सुविधार्थ बरसाती पानी के एकत्रीकरण हेतु विद्यालय प्रांगण में कुंड का निर्माण।
- विद्यालय में छात्राओं हेतु राजस्थान बटालियन 93, जोधपुर की एन.सी.सी. विंग का प्रारम्भ एवं मान्यता प्राप्त।
- प्राईमरी सेक्शन के विद्यार्थियों की सुविधार्थ विद्यालय के प्राईमरी सेक्शन का नवीन सत्र से जीवन विज्ञान भवन में शुभारम्भ।
- वर्ष 2015-16 में विद्यालय की बोर्ड कक्षाओं का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत एवं प्रथमतः चार विद्यार्थियों के 10 सी.जी.पी.ए. अंक।

गत तीन वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या में क्रमशः वृद्धि	
वर्ष	विद्यार्थी
2013-2014	929
2014-2015	1135
2015-2016	1299

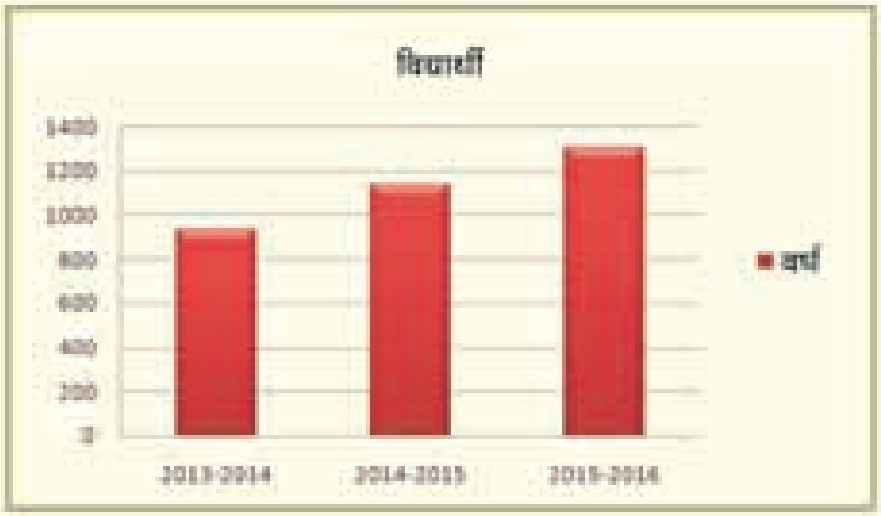

विमल विद्या विहार
वार्षिकोत्सव समारोह (19 अप्रेल 2015)

विमल विद्या विहार
प्राइमरी सेक्शन का जीवन विज्ञान भवन में स्थानान्तरण

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

- विद्यालय भवन के विस्तारीकरण एवं कक्षों के नवीनीकरण के अन्तर्गत 6 क्लास रूम, 1 कम्प्यूटर लैब, 3 साइंस लैब (फिजिक्स, केमेस्ट्री व बॉयोलोजी) व पुस्तकालय के नवनिर्मित प्रथम तल का लोकार्पण।
- विद्यालय की कक्षाओं का स्मार्ट क्लास के रूप में अपग्रेडेशन।
- विद्यालय भवन में स्वागत कक्ष का नवनिर्माण।
- पर्यावरण संरक्षण एवं सौन्दर्यकरण की दृष्टि विद्यालय परिसर में हरितिकरण।
- विद्यालय को सीनियर सैकण्डरी स्कूल का दर्जा प्राप्त।
- स्पोर्ट्स एकेडमी का शुभारम्भ।
- प्रयोगशालाओं के सुव्यवस्थितिकरण की दृष्टि से नये उपकरणों की सुव्यवस्था।
- विद्यालय में प्राचार्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति।
- विद्यालय के वार्षिकोत्सव 'सर्जन' का भव्य समारोहपूर्वक आयोजन।

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर
वार्षिकोत्सव समारोह : 'सृजन'

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर
नये भवन का उद्घाटन समारोह (13 अगस्त 2016)

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर

- विद्यालय भवन का नवीनीकरण एवं आधुनिक संसाधनों से युक्त प्रशासनिक प्रखण्ड का निर्माण।
- विद्यालय भवन में महाश्रमण विंग के नाम से प्रथम तल पर एक हॉल एवं तीन कमरों का नवनिर्माण।
- नवीनीकृत भवन एवं नवनिर्मित प्रखण्डों का उद्घाटन समारोह आयोजित।
- वातानुकूलित कम्प्यूटर लैब व पुस्तकालय की स्थापना।
- वर्ष 2005 में भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा विद्यालय के दो विद्यार्थियों को इन्सपायर अवार्ड प्रदत।
- पर्यावरण संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण की दृष्टि विद्यालय परिसर में हरितीकरण।

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, दमकोर
नवीनीकृत विद्यालय भवन : उद्घाटन समारोह (02 जुलाई 2016)

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर
नवीनीकृत विद्यालय भवन : विभिन्न प्रखण्डों का उद्घाटन (02 जुलाई 2016)

समण संस्कृति संकाय

- दिनांक 26 जुलाई 2015 को जैन विद्या के 17वें एवं दिनांक 17 जुलाई 2016 को जैन विद्या 18वें दीक्षान्त समारोह का परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजन एवं क्रमशः 83 व 92 विद्या उपाधि धारकों को उपाधियां प्रदत्त।
- जैन विद्या के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं अधिक से अधिक परीक्षार्थियों व कार्यकर्ताओं को जोड़ने के उद्देश्य से संपूर्ण भारत भर में जैन विद्या दिवस एवं जैन विद्या सप्ताह का आयोजन।
- जैन विद्या परीक्षाओं से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के प्रभारी, आंचलिक संयोजकों व केन्द्र व्यवस्थापकों के आपसी समन्वय व सहयोग से जैन विद्या के कार्य को गति प्रदान करने की दृष्टि से प्रभारी, आंचलिक संयोजक व केन्द्र व्यवस्थापक कार्यशालाओं का आयोजन।
- जैन विद्या के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करने की दृष्टि से देश के विभिन्न क्षेत्रों में राज्य /अंचल स्तरीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन।
- जैन विद्या परीक्षाओं की पूर्व तैयारी की दृष्टि से प्रथम बार देश के विभिन्न क्षेत्रों में जैन विद्या संपर्क कक्षाओं का आयोजन।
- जैन विद्या के प्रति कार्यकर्ताओं एवं परीक्षार्थियों में रुचि जागृत करने के उद्देश्य से जैन विद्या संगठन यात्रा का शुभारम्भ।
- जैन विद्या से संबंधित विभिन्न गतिविधियों व योजनाओं के सुचारू संचालन हेतु अनुदान राशि के अनुसार अनुदानदाताओं की चार श्रेणियों के अन्तर्गत सहयोग से जैन विद्या कोष की स्थापना।
- जैन विद्या के परीक्षार्थियों के बौद्धिक विकास हेतु लेख प्रतियोगिता का शुभारम्भ।
- जैन विद्या से संबंधित आयोजनों में जैन विद्या का वातावरण निर्मित करने के उद्देश्य से जैन विद्या गीतिका का निर्माण।
- समण संस्कृति संकाय के प्रतीक चिह्न (Logo) का निर्माण।

वर्ष	आवेदक	परीक्षार्थी	परिणाम प्रतिशत	परीक्षा केन्द्र
2013–2014	9863	6305	81.09	264
2014–2015	10104	6228	78.98	271
2015–2016	13639	8927	82.77	302

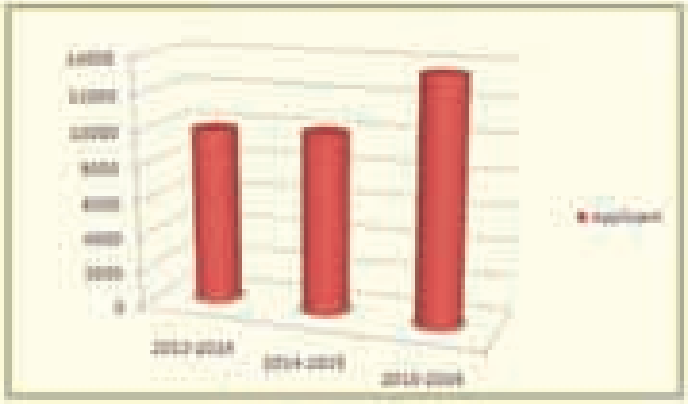

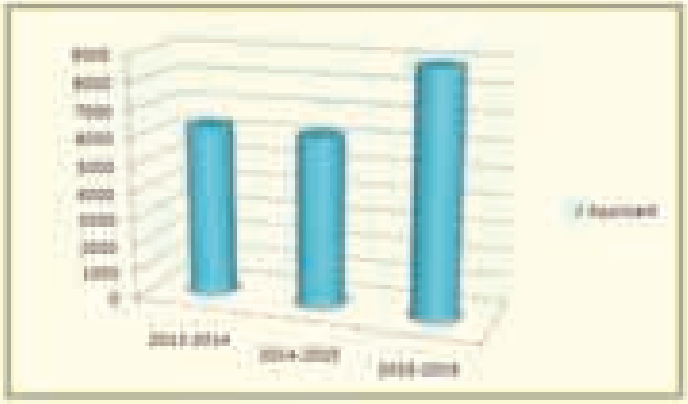

जैन विद्या कार्यशालाएं

वर्ष	आवेदक	उत्तीर्ण परीक्षार्थी	केन्द्र
2013–2014	1607	1247	71
2014–2015	1736	1441	74
2015–2016	2212	1661	97

जैन विद्या
17वां दीक्षांत समारोह (26 जुलाई 2015) विराटनगर

समण संस्कृति संकाय
18वां दीक्षांत समारोह (11 अगस्त 2016) गुवाहाटी

जीवन विज्ञान विभाग

- दिनांक 05 नवम्बर 2014 एवं दिनांक 24 नवम्बर 2015 को देश–विदेश में जीवन विज्ञान दिवस समारोह का भव्य आयोजन। हजारों विद्यार्थियों और सैकड़ों विद्यालयों की सहभागिता।
- जीवन विज्ञान को देश–विदेश में सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने एवं प्रभावी क्रियान्वयन की दृष्टि से जीवन विज्ञान राष्ट्रीय चिंतन संगोष्ठियों का आयोजन तथा यथायोग्य निर्णय।
- जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2014 एवं 2015 का आयोजन। दो वर्षों की प्रतियोगिताओं में 1030 प्रतियोगियों की सहभागिता।
- देश–विदेश में संचालित जीवन विज्ञान अकादमियों को जीवन विज्ञान अकादमी, केन्द्रीय कार्यालय से निरन्तर अपेक्षित मार्गदर्शन, आपसी संपर्क एवं एकरूप कार्यप्रणाली के विकास की दृष्टि से प्रथम बार जीवन विज्ञान अकादमी कार्यकर्ता प्रशिक्षण सेमिनार एवं जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन।
- जीवन विज्ञान पाठ्य पुस्तकों की सामग्री में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुरूप अपेक्षित संशोधन एवं कक्षा 3, 4 एवं 5 के संशोधित संस्करणों का नवीन स्वरूप व आकर्षक रंगीन कलेवर में प्रकाशन।
- विदेश की धरती पर जीवन विज्ञान की गूंज। जीवन विज्ञान अकादमी, यू.ए.ई. द्वारा दुबई के विद्यालयों में जीवन विज्ञान का प्रभावी प्रस्तुतिकरण। हजारों विद्यार्थी व शिक्षक लाभान्वित।
- देश के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन विज्ञान विद्यार्थी–शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। हजारों विद्यार्थी व शिक्षक लाभान्वित।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

- रसायनशाला के मुख्य न्यासी पद पर श्री शांतिलाल बरमेचा, मुंबई की लगभग साढ़े तीन वर्षों की उल्लेखनीय सेवाओं के पश्चात् दिनांक 28 फरवरी 2016 को मुख्य न्यासी पद पर श्री मूलचंद नाहर, जागुंदा–बैंगलोर का मनोनयन।
- रसायनशाला के विकास व विस्तार की दृष्टि से न्यास मण्डल में नए सदस्यों का मनोनयन तथा न्यास मण्डल की सदस्य संख्या में वृद्धि।
- रसायनशाला के उत्पादों के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु समय–समय पर देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रायोजकों के सहयोग से निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविरों का आयोजन।
- उत्पादों के समुचित संरक्षण हेतु रसायनशाला के मुख्य स्टोर का वातानुकूलीकरण।
- उत्पादन क्षमता बढ़ाने की दृष्टि से रसायनशाला में नवीन चूर्ण पिसाई मशीन की स्थापना।
- द्विवर्षीय कार्यकाल के दौरान रसायनशाला के ओ.पी.डी. विभाग के अन्तर्गत 13788 रोगी लाभान्वित।

जीवन विज्ञान संबंधी
संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, प्रशिक्षण कार्यक्रम

जीवन विज्ञान संबंधी संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, प्रशिक्षण कार्यक्रम

साधना
प्रेक्षा फाउण्डेशन

- आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र का निर्माण संघवी अवशिष्ट कार्य पूर्ण एवं नवनिर्मित केन्द्र का उपयोग प्रारंभ।
- आगन्तुक शिविरार्थियों को समुचित आवास सुविधा हेतु सुविधा युक्त आनंद निलय अतिथिगृह का निर्माण कार्य तीव्र गति से प्रगति पर।
- तुलसी अध्यात्म नीडम् के ध्यान कक्ष का सातानुकूलीकरण।
- आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र से अधिकाधिक लोगों को लाभान्वित करने की दृष्टि से अनुदान राशि के अनुसार चार श्रेणियों के अन्तर्गत 'प्रेक्षा कार्ड योजना' का शुभारम्भ।
- वर्ष 2015 एवं 2016 के फरवरी माह में सप्त दिवसीय मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन एवं सैकड़ों शिविरार्थियों की सहभागिता।
- प्रतिमाह आयोजित होने वाले प्रेक्षाध्यान शिविरों की श्रृंखला में तुलसी अध्यात्म नीडम् में 16 प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन एवं सैकड़ों शिविरार्थी लाभान्वित।
- देशभर में संचालित प्रेक्षाध्यान केन्द्रों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों व गतिविधियों को एकरूपता प्रदान करने की दृष्टि से संचालित प्रेक्षाध्यान केन्द्रों को उनके स्वरूप के आधार पर अलग–अलग तीन श्रेणियों में प्रेक्षा फाउण्डेशन के अन्तर्गत संबद्धता प्रदान करने की योजना का शुभारम्भ। अनेक केन्द्रों को संबद्धता प्रदत्त।
- प्रेक्षाध्यान की गतिविधियों की जानकारी अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने के उद्देश्य से ई–न्यूज लेटर का शुभारम्भ।
- प्रेक्षाध्यान पत्रिका का नए आकार, कलेवर व रंगीन स्वरूप में प्रकाशन प्रारंभ।
- प्रेक्षाध्यान पत्रिका की सदस्य संख्या में वृद्धि व व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु प्रेक्षाध्यान पत्रिका प्रतिनिधि मंडल का गठन।
- श्री अशोक संचेती, दिल्ली की 3 वर्षो तक प्रेक्षाध्यान पत्रिका के संपादक के रूप में सेवाओं के पश्चात् मई 2016 से नवीन संपादक के रूप में श्री लूणकरण छाजेड़, गंगाशहर की नियुक्ति।

मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर - 2015

मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर - 2016

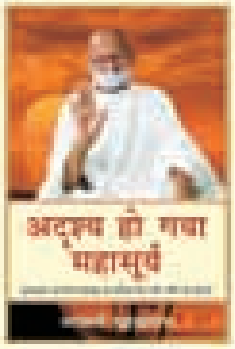

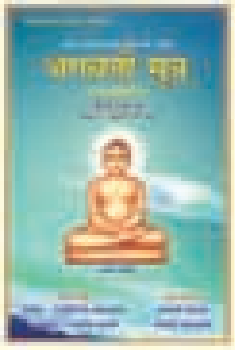

साहित्य

- द्विवर्षीय कार्यकाल के दौरान 47 नवीन शीर्षकों की 59431 प्रतियाँ एवं 43 शीर्षकों से पुनर्मुद्रित 113419 प्रतियां प्रकाशित।
- वर्ष 2019–2020 में आयोजित होने वाले आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी की अनुकम्पा से आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के संदर्भ में साहित्य प्रकाशन आदि से संबंधित संपूर्ण कार्य का दायित्व जैन विश्व भारती को प्राप्त करने का सौभाग्य। इस कार्य हेतु आचार्यप्रवर की दृष्टि के अनुसार जैन विश्व भारती के अन्तर्गत 'आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति' का गठन।
- जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित नवीन साहित्य पाठकों को घर बैठे उपलब्ध कराने की दृष्टि से 'साहित्य आपके द्वार' योजना का शुभारम्भ।
- आचार्यप्रवर की यात्रा में संचालित जैन विश्व भारती के चल साहित्य विक्रय केन्द्र के व्यवस्थित संचालन हेतु 'साहित्य वाहिनी' नवीन बस का लोकार्पण एवं व्यवस्थित संचालन।
- साहित्य की सहज सुलभता की दृष्टि से साहित्य के ऑनलाईन विक्रय हेतु ऑनलाईन स्टोर http://books.jvbharati.org का शुभारम्भ।
- अहिंसा यात्रा के अन्तर्गत आचार्यश्री महाश्रमणजी के देश–विदेश में पदार्पण पर वहां की स्थानीय जनता को पूज्यप्रवर के सद्विचारों से लाभान्वित करने की दृष्टि से चुनिंदा पुस्तकों का विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन।
- अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रकाशक हारपर कॉलिन्स पब्लिशर्स, दिल्ली द्वारा जैन विश्व भारती के साथ अनुबंध के अन्तर्गत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की पुस्तक 'ऋषभायण' के अंग्रेजी संस्करण का प्रकाशन एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी के कर–कमलों में लोकार्पण।
- साहित्य के व्यापक प्रचार–प्रसार की दृष्टि से समय–समय पर देश के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में स्टॉल लगाकर साहित्य का प्रदर्शन एवं विक्रय।
- साहित्य विभाग की व्यवस्थाओं में अपेक्षित परिवर्तन व संशोधन के परिणामस्वरूप विभाग की कार्यदक्षता में वृद्धि।
- श्रावक संबोध प्रतियोगिता एवं आगम मंथन प्रतियोगिता-VIII का आयोजन। दोनों प्रतियोगिताओं में कुल 2225 प्रतियोगियों की सहभागिता।

शोध

- जैन विश्व भारती के शोध विभाग को सक्रिय करने हेतु शोध विभाग में संयोजक की नियुक्ति।
- आचार्यों के वाचना प्रमुखत्व/प्रधान संपादकत्व में संपादित/अनुवादित अप्रकाशित आगमों के शीघ्र प्रकाशन संबंधी प्रक्रिया जारी।
- जैन विश्व भारती द्वारा पूर्व में प्रकाशित अनुपलब्ध आगमों के प्राथमिकता से पुनर्प्रकाशन की व्यवस्था।
- आगम प्रकाशन सहयोगी के रूप में अनुदानदाताओं से अनुदान राशि प्राप्त कर नवीन आगमों के प्रकाशन एवं पूर्वमुद्रित आगमों के पुनर्मुद्रण की सुचारू व्यवस्था।
- आगम प्रकाशन सहयोगी के रूप में अनुदानदाताओं से अनुदान राशि प्राप्त कर नवीन आगमों के प्रकाशन एवं पूर्वमुद्रित आगमों के पुनर्मुद्रण की सुचारू व्यवस्था।

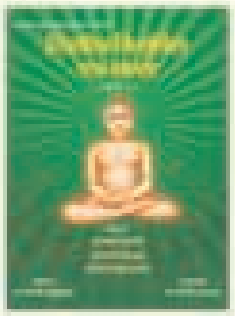

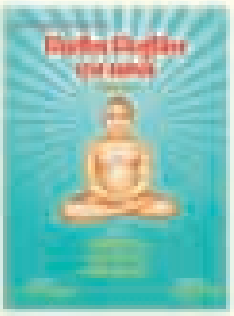

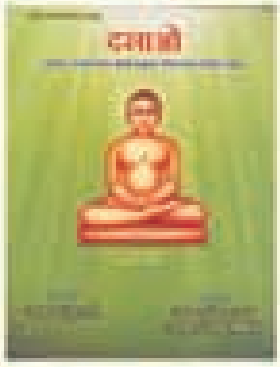

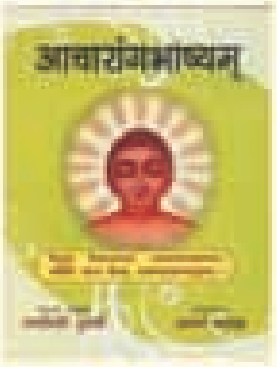

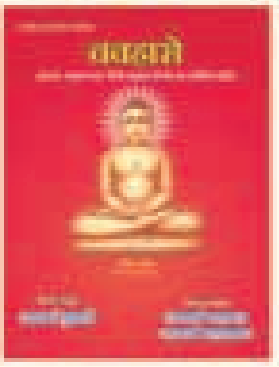

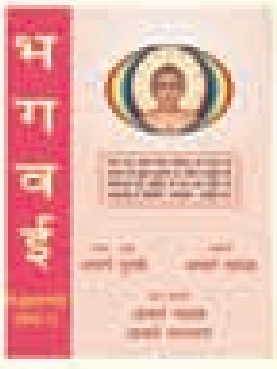

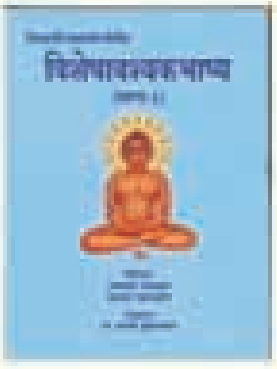

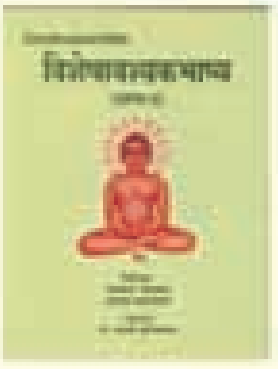

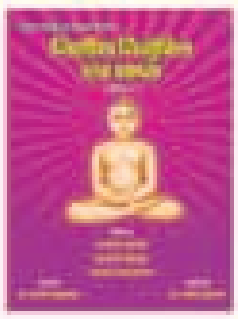

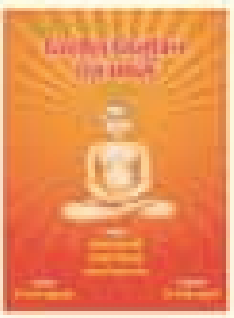

विविध

- 139 आजीवन सदस्यों व 25 विशिष्ट सदस्यों की वृद्धि के साथ समृद्ध बना जैन विश्व भारती परिवार।
- दिनांक 16 मई 2016 को काजीरंगा (असम) में आयोजित जैन विश्व भारती की साधारण सभा में जैन विश्व भारती के नियमोपनियम में अपेक्षित संशोधन/परिवर्द्धन/परिवर्तन।
- जैन विश्व भारती की गतिविधियों के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग का गठन एवं फेसबुक, व्हाट्सएप्प आदि सोशल मीडिया पर जैन विश्व भारती की संपूर्ण गतिविधियों का व्यापक प्रचार–प्रसार।
- विदेशों में जैन विश्व भारती की गतिविधियों के प्रचार–प्रसार हेतु संयोजकीय व्यवस्था का प्रारंभ।
- नॉर्थ अमेरिका स्थित जैन समाज के चारों संप्रदायों की प्रमुख संस्था Fedration of Jain Association in North America (JAINA) द्वारा जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान को संयुक्त रूप से Presidential Award प्रदत्त।
- जैन विश्व भारती में कार्यरत कर्मचारियों की कार्य कुशलता में विकास हेतु 'कर्मचारी प्रोत्साहन योजना' का शुभारम्भ।
- लाडनूं शहर को पॉलीथीन मुक्त बनाये जाने के उद्देश्य से जैन विश्व भारती द्वारा लाडनूं उपखण्ड प्रशासन को जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान के नाम से मुद्रित 15000 कपड़े के थैले स्थानीय वितरण हेतु भेंट।
- अन्य संघीय संस्थाओं के साथ समन्वय। यथा– सेवाभावी आयुर्वैदिक रसायनशाला, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, पारमार्थिक संस्था आदि।

पुरस्कार एवं सम्मान

पुरस्कार का नाम	पुरस्कार प्राप्तकर्ता	वर्ष	प्रायोजक
गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार	मुमुक्षु डॉ. शान्ता जैन, लाडनूं	2012	एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार	श्रीमती वीणा श्यामसुखा, कोलकाता	2013	एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार	श्रीमती कनक बरमेचा, सूरत	2014	एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
संघ सेवा पुरस्कार	श्री विमल कुमार नाहटा, गुवाहाटी	2015	नेमचन्द जेसराज सेखानी चैरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार	श्रीमती माला कातरेला, चेन्नई	2014	सूरजमल सुराना चैरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी
जय तुलसी विद्या पुरस्कार	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी शिक्षा समिति, जयपुर	2016	चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चैरिटेबल ट्रस्ट, सूरत

उक्त सभी पुरस्कार आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजित विशेष कार्यक्रम में दिनांक 20 सितम्बर, 2016 को गुवाहाटी में प्रदान किये जायेंगे।

'पद्म विभूषण' श्री श्री रविशंकरजी जैन विश्व भारती संचालित एवं एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता द्वारा प्रायोजित आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान से सम्मानित

विशिष्ट महानुभावों को विशिष्ट सम्मान

जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष 'शासनसेवी' श्री गुलाबचंद चिंडालिया जैन विश्व भारती के सर्वोच्च सम्मान 'भारती भूषण' से सम्मानित।

जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष स्व. मूलचंदजी बोथरा को जैन विश्व भारती को प्रदत्त विशिष्ट सेवाओं हेतु मरणोपरांत सम्मान

'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी जैन विश्व भारती द्वारा संचालित एवं नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता द्वारा प्रायोजित 'संघ सेवा पुरस्कार' से सम्मानित।

परिसर विकास

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर
सुविधाओं एवं संसाधनों का विकास

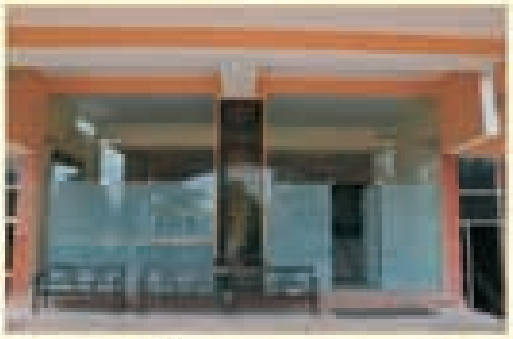

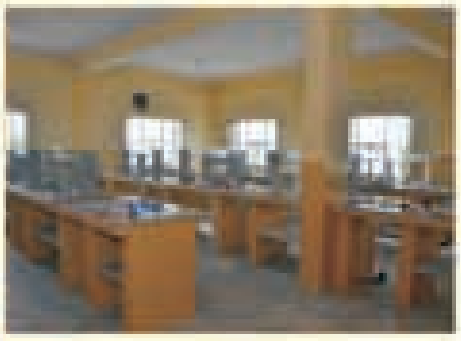

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर

सुविधाओं एवं संसाधनों का विकास

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर

सुविधाओं एवं संसाधनों का विकास

विमल विद्या विहार

सुविधाओं एवं संसाधनों का विकास

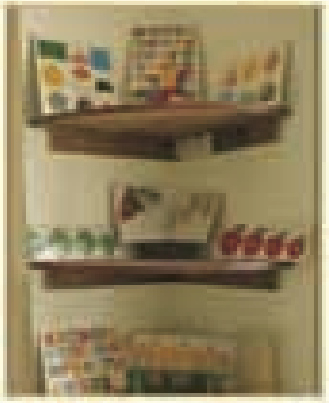

जैन विश्व भारती संस्थान में मातृ संस्था की प्रेरणा से नवनिर्मित 'सत्कार' जलपान गृह

मातृ संस्था द्वारा सौंदर्यीकृत 'आचार्य तुलसी अमृत उद्यान'

आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र के अन्तर्गत निर्माणाधीन अतिथि गृह 'आनंद निलय'

संपूर्ण जैन विश्व भारती परिसर में अपेक्षित मरम्मत रंग-रोशन एवं नवीनीकरण कार्य

सचिवालय स्थित अध्यक्षीय कक्ष का विस्तारीकरण व नवीनीकरण

शुभम् अतिथि गृह का विजिटर लॉंज नये फर्नीचर से सुसज्जित

परिसर में समुचित बिजली व्यवस्था एवं विद्युत व्ययों में कटौति की दृष्टि से नई एल.ई.डी. लाईट्स व सोलर लाईट्स स्थापित

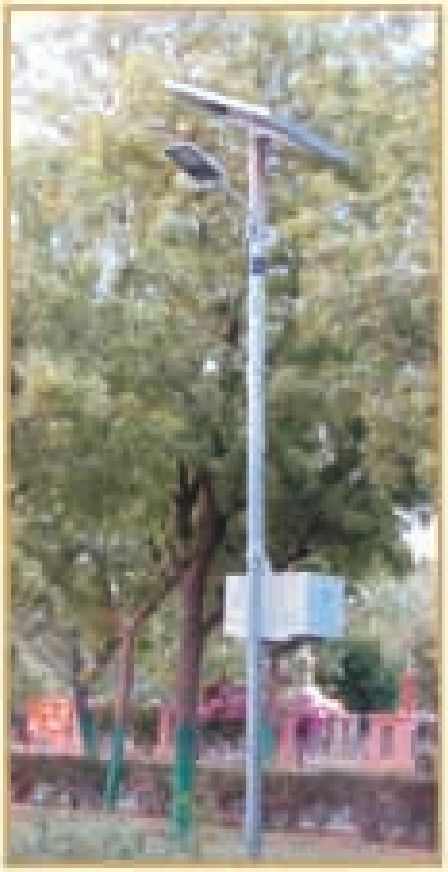

परिसर स्वच्छता अभियान से स्वच्छ बना जैन विश्व भारती परिसर

पानी की सुलभता व यथावश्यकता आपूर्ति हेतु पानी के टैंकर की व्यवस्था

सुरक्षा व्यवस्था के दुरस्तीकरण की दृष्टि से नई सिक्योरिटी कंपनी के साथ अनुबंध
तथा परिसर की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखने की दृष्टि से
200 से अधिक सी.सी.टी.वी. कैमरे स्थापित।

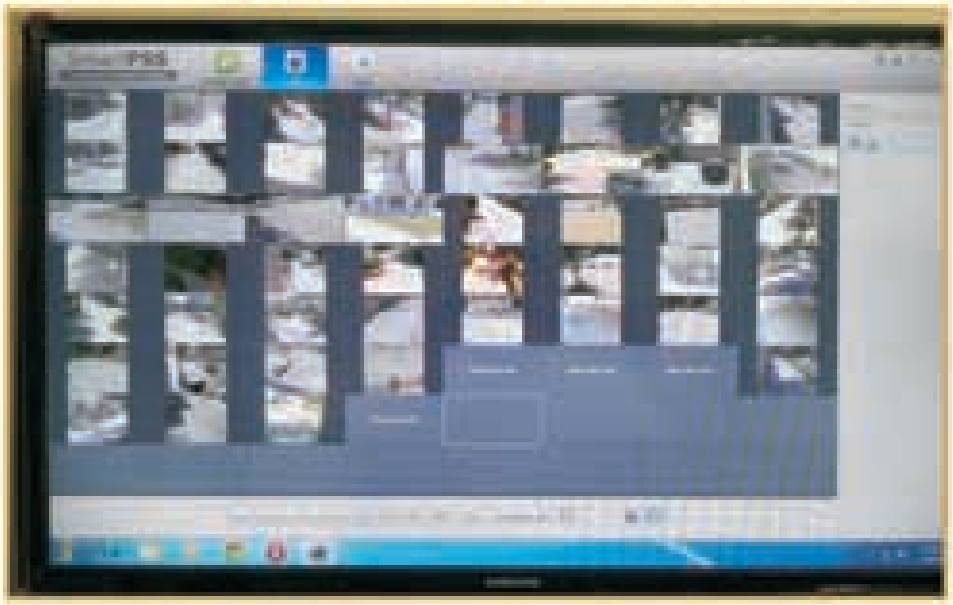

परिसर की काफी समय से लंबित चार दिवारी को परिसर सुरक्षा की दृष्टि से ऊंचा करने का कार्य संपन्न

Finanacial Summary
2014-2016

Particulars	24.09.2014	31.08.2016	Difference
General Fund	94179642	120938769	26759127
Corpus Fund	123870551	142660151	18789600
Building Fund	122630585	130516585	7886000
Fixed Assets	526810995	533439482	6628487
Investments	111166515	127508247	16341732

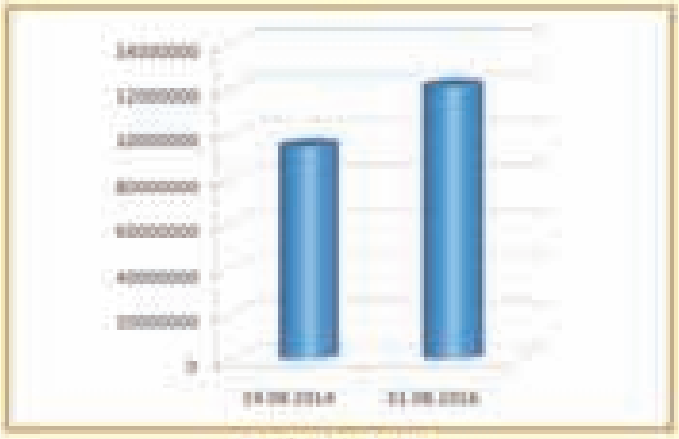

GENERAL FUND

CORPUS FUND

BUILDING FUND

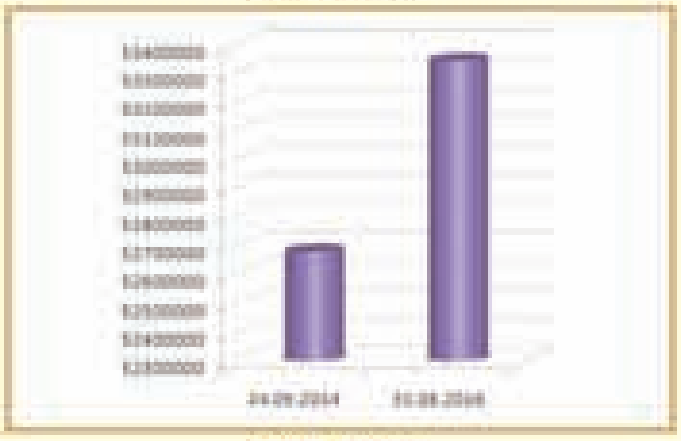

FIXED ASSETS

INVESTMENT

संत पुरुषों का जैन विश्व भारती में पावन पर्दापण

उच्च पदासीन महानुभावों के साथ जैन विश्व भारती अध्यक्ष एवं टीम

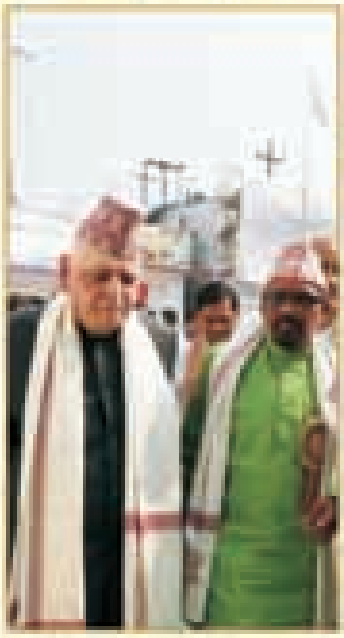

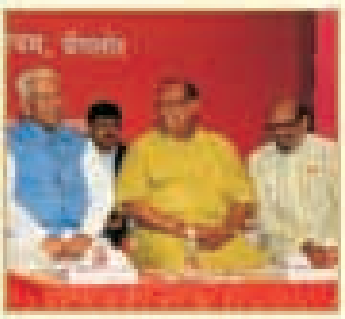

विनम्र श्रद्धांजलि

आलोच्य अवधि में जैन विश्व भारती के उच्च पदस्थ दिवंगत महानुभावों के संदर्भ में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के उद्गार

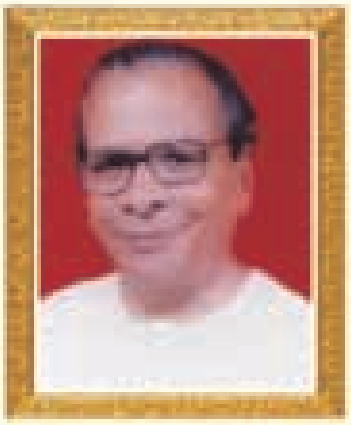

'शासन सेवी' स्व. बच्छराजजी नाहटा

कुलपति, जैन विश्व भारती (2012-2015)

लाडनूं के श्री बच्छराजजी नाहटा जैन विश्व भारती से लंबे समय से जुड़े हुए थे। तेरापंथ समाज और लाडनूं नगरपालिका से भी उनका गहरा संबंध था। वे यदा-कदा गुरुकुलवास में भी आते, अपनी बात कहते, विचार देते। वर्तमान में वे जैन विश्व भारती के कुलपति पद पर थे। बच्छराजजी एक अच्छे कार्यकर्ता थे। गुरुदेव के लाडनूं चातुर्मास में व्यवस्था समिति से जुड़कर भी उन्होंने अपनी सेवाएं दी। अपनी बात को रखने का उनका अपना तरीका था। वे चले गए, मानो अब एक अच्छे कार्यकर्ता की कमी हो गई है। उनके पीछे परिवार में खूब अच्छे संस्कार और अच्छी भावना रहे। उनकी आत्मा खूब आध्यात्मिक विकास करे।

(साभार : विज्ञप्ति वर्ष 21, अंक 29)

– आचार्य महाश्रमण

'शासन सेवी' स्व. मूलचंदजी बोथरा

अध्यक्ष, जैन विश्व भारती (2000-2002)

मूलचंदजी बोथरा हमारे तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्टतम श्रावक थे, ऐसा कहना मुझे अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं लग रहा है। धार्मिक दृष्टि से भी उनका जीवन बहुत उन्नत था। ऐसे श्रावक संभवतः कम मिलते हैं, जिनके जीवन में इतना त्याग हो और धर्मसंघ व गुरु के प्रति इतना आत्मीयभाव हो। उन्होंने धर्मसंघ को किस रूप में अपनी सेवाएं दी। एक समय था, जब वे जैन विश्व भारती के अध्यक्ष थे। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान से भी वे जुड़े रहे। तेरापंथ विकास परिषद् के सदस्य भी वे बना दिये गये थे, तेरापंथ धर्मसंघ में जो एक महत्वपूर्ण स्थान है। तेरापंथ की चार पीढ़ियों को देखने का, चार पीढ़ियों के शासनकाल में रहने का मौका उन्हें प्राप्त हुआ। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने उनके मकान में प्रवास किया था, आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ उनका कितना संपर्क रहा और बाद में भी उनका संपर्क बना रहा। संपर्क ही नहीं, बहुत सहजता से धार्मिक संबंध बना रहा। मूलचंदजी तो धर्मसंघ के विशिष्टतम व्यक्ति लग ही रहे हैं, उनका परिवार भी विशिष्ट है, ऐसा कहा जा सकता है।

(साभार : विज्ञप्ति वर्ष 21, अंक 12)

– आचार्य महाश्रमण

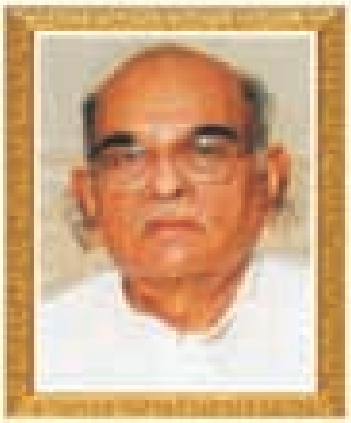

'भारती भूषण' स्व. खेमचंदजी सेठिया

अध्यक्ष, जैन विश्व भारती (1972-1976, 1984-1990)

खेमचंदजी सेठिया को हमने गुरुदेव तुलसी के समय देखा। जैन विश्व भारती के साथ उनका कितना संबंध रहा। तेरापंथ समाज की इस प्रमुख संस्था के साथ उनका गहरा लगाव था। उसके संचालन और विकास में उनका कितना योगदान रहा। वे 'भारतीभूषण' अलंकरण से अलंकृत हुए। ऐसे श्रावक हमारे समाज में संभवतः कम मिलेंगे, जिनके प्रति गुरुओं का इतना विश्वास और अनुग्रह का भाव रहा। ऐसे श्रावक के अवसान से तेरापंथ श्रावक समाज में मानो क्षति हुई है। हालांकि संघ और समाज में नए, अच्छे और धार्मिक व्यक्ति आ सकते हैं, आने चाहिए और आते रहते हैं, पर सेठियाजी की अपनी विशेषताएं थीं। यह सेठिया परिवार, गंगाशहर और कोलकाता तेरापंथ समाज की ही नहीं, संपूर्ण तेरापंथ समाज की भी एक क्षति है।

(साभार : विज्ञप्ति वर्ष 21, अंक 30)

– आचार्य महाश्रमण

उक्त दिवंगत आत्माओं को जैन विश्व भारती परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि